Ref-No. GGVS-2021/21/107

जैविक खेती में पंचगव्य निर्माण की विधि एवं प्रयोग

पंचगव्य

पंचगव्य एक जैविक उत्पाद है जो पौधों की बढ़वार तथा पौधों को रोगों के प्रति लड़ने की शक्ति प्रदान करता है। पंचगव्य देशी गाय के 5 उत्पाद जैसे – गाय का गोबर, गौमूत्र, दूध, दही, के अलावा केला, कच्चा नारियल, शहद तथा पानी को मिलाकर बनाया जाता है। यह मिट्टी एवं फसलों के लिए लाभदायक होता है।

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

मिश्रण–1

- गाय का गोबर 7 किलों
- गाय का घी 1 किलों
- दोनों को एक टंकी में मिलाकर 3 दिन तक सुबह एवं शाम को हिलाये

मिश्रण–2

- गौमूत्र 10 लीटर
- पानी 10 लीटर
- 3 दिन बाद मिश्रण–1 में मिश्रण–2 मिलाकर 15 दिन तक सुबह एव शाम हिलाये

मिश्रण–3

- गाय का दूध 3 लीटर
- गाय का दही 2 लीटर
- कच्चा नारियल पानी 3 लीटर
- गुड 3 किलों
- पका हुआ केला 12 नग

15 दिन बाद पहले से तैयार (मिश्रण–1 एवं मिश्रण–2) के मिश्रण में मिश्रण–3 को मिलाये तथा सभी मिश्रणों से तैयार घोल की टंकी को खुले में छाया में रख दें तथा इस सम्पूर्ण घोल को रोज सुबह एवं शाम हिलाते रहे। कुल 30 दिन बाद पंचगव्य का सान्द्र घोल तैयार हो जाता है। ध्यान रहे पंचगव्य में भैंस का कोई भी उत्पाद काम में नही लें जहां तक संभव हो विदेशी नस्ल की गाय के बजाय देशी गाय का उत्पाद ही काम में लें

इस पंचगव्य के सान्द्र घोल को 30 दिन में तैयार होने के बाद जाली या पोलीथीन से ढ़क दें।

विभिन्न फसलों में पंचगव्य के प्रयोग हेतु सारणी

फसल	स्प्रे का समय
धान	रोपाई के बाद 10, 15, 30 एवं 50 दिन पर
उड़द	असिंचित में पहला स्प्रे फूल आने पर एवं दूसरा स्प्रे फूल आने के 15 दिन बाद
मूंग	बुआई के बाद 15, 25, 30, 40 तथा 50 दिन पर
भिण्डी	बुआई के बाद 30, 45, 60 एवं 75 दिन पर
टमाटर	नर्सरी एवं रोपाई के 40 दिन बाद
प्याज	नर्सरी एवं रोपाई के 45 एवं 60 दिन बाद

प्रयोग

पर्णीय छिड़काव के रूप में – अधिकतर फसलों में 3 प्रतिशत पंचगव्य बहुत प्रभावकारी है। जैसे – 3 लीटर पंचगव्य 100 लीटर पानी को मिलाकर पर्णीय छिड़काव करते है। छिड़काव से पहले घोल को छान लेना चाहिए ताकि स्प्रे करते समय नोजल बन्द न हो

सिंचाई के रूप में – पंचगव्य घोल को सिंचाई के रूप में प्रयोग कर सकते है। इसके लिए मात्रा 20 लीटर/एकड़ की दर से प्रयोग करें। इसे धरातलीय सिंचाई या ड्रिप सिंचाई के साथ प्रयोग में ले सकते है।

बीज या पौध उपचार – नर्सरी बेड को 3 प्रतिशत घोल से ड्रेचिंग करते है या पौधों को 3 प्रतिशत सोल्यूशन में डुबोते है। पौध को घोल में 30 मिनट तक रखना चाहिए।

पंचगव्य के लाभ –

- पौधों की पत्तियाँ बड़ी एवं सघन हो जाती है। प्रकाश संशलेषण की क्रिया बढ़ने से मेटाबोलिक क्रिया बढ़ती है एवं पौधे स्वस्थ रहते है
- पौधों में शाखाये बढ़ती है, जिससे ज्यादा उत्पादन होता है
- पौधों की जड़े सघन हो जाती है। जिससे पौधों को जमीन से पौषक तत्व लेना आसान एवं सुगम हो जाता है
- पंचगव्य का प्रयोग सभी फसलों के किया जा सकता है
- पंचगव्य का फसलों पर स्प्रे करने पर यह पौधों की पत्तियों एवं तने पर एक तेल की परत बना लेता है, जिससे पौधों से पानी का वाष्पोत्सर्जन कम होता है। इससे फसल की पानी की मांग 30 प्रतिशत तक कम हो जाती है